तेहत्तराणि, एदाणि दुगुणिय एक्कावीसमवणिदे गुणगारसलागासंकलणा होदि। कधमेक्कवीसस्स उप्पत्ती ? एगरूवं विरलिय चत्तारि दादूण अण्णोण्णब्भत्थं करिय पंचहि गुणिय एगादिचदुग्गुणसंकलणं पक्खित्ते अवणयणसलागपमाणं एक्कवीसं होदि। एत्थ करणगाहा–

इट्ठसलागाखुत्तो चत्तारि परोप्परेण संगुणिय।
पंचगुणे खित्तव्वा एगादिचदुगुणा संकलणा ॥ ७ ॥

एत्थ सव्वत्थ दुरूवूणगच्छं विरलेदव्वं ५। २१। ८५। ३४१। १३६५। ५४६१। एदाओ अवणयणधुवरासीओ अणंतरहेट्ठिमं चदुहि गुणिय रूवं पक्खित्ते

अब तीन समुद्रोंके क्षेत्रफलका संकलन कहते हैं– तीन रूपोंमेंसे एक रूपको घटाकर उसे पृथक् स्थापित करें। पुनः शेषको आधा कर रूपके ऊपर वर्गणराशिको स्थापितकर और उसके ऊपर रूपको स्थापितकर अधस्तन और उपरिम रूपोंको सोलहसे गुणाकर 'रूपोंमें गुणा और अर्थोमें वर्गणा' आर्या छन्दके इस पादसे चार हजार छयानवे (४०९६) संख्या प्राप्त होती है। पुनः उक्त प्रकारसे प्राप्त शलाकाओंमेंसे 'एक कम करके शेषको आदिसे गुणा करें, पुनः एक कम गुणकारशलाकाका भाग दें, तो इष्टराशि उत्पन्न हो जाती है' आर्या छन्दके इस पादके अनुसार दो सौ तेहत्तर (२७३) संख्या प्राप्त होती है। इस संख्याको दूनाकर उसमेंसे इक्कीस घटा देनेपर गुणकारशलाकाओंका संकलन हो जाता है।

उदाहरण– प्रथम तीन समुद्रोंका संकलन– शलाका ३;

१ × १६
१ × १६ १६ × १६ × १६ = ४०९६;
१ × १६

$$\frac{४०९६ - १}{१६ - १} = \frac{४०९५}{१५} = २७३;\quad २७३ \times २ = ५४६;\quad ५४६ - २१ = ५२५$$

तीन समुद्रोंकी संकलित गुणकारशलाका।

शंका– यहांपर घटाई जानेवाली इक्कीस संख्याकी उत्पत्ति कैसे हुई ?

समाधान– एकरूपको विरलित कर उसके ऊपर चारको देयरूपसे देकर अन्योन्याभ्यास करके उसे पांचसे गुणाकर एक आदि चतुर्गुणसंकलनको प्रक्षेप करने पर अपनयनशलाकाका प्रमाण इक्कीस हो जाता है।

उदाहरण– २१ की उत्पत्ति–३ – २ = १; $\overset{४}{१}$ = ४; ४ × ५ = २०; २० + १ = २१ तीन समुद्रोंकी अपनयनशलाका.

इस विषयमें यह करणगाथा है–

इष्ट शलाकाराशिका जो प्रमाण हो उतने वार चारको रखकर परस्परमें गुणा करें, पुनः उसे पांचसे गुणा करें और फिर एक आदि चतुर्गुणसंकलनराशिको प्रक्षेप करना चाहिए। ऐसा करनेपर अपनयनराशिका प्रमाण आ जाता है ॥ ७ ॥

उप्पज्जंति जाव सयंभुरमणसमुद्दो त्ति । संपदि सयंभुरमणसमुद्दविरहिदसव्वसमुद्दखेत्तफलाणयणविधाणं वुच्चदे– दीव-सायररूवाणं अद्धं रूवूणं विरलिय रूवं पडि वेण्णि दादूण अण्णोण्णब्भासे कदे चोद्दसगुणिदजोयणलक्खमूलेण खंडिदसेढीए वग्गमूलस्स अद्धमागच्छदि । अध पुव्वविरलणाए रूवं पडि जदि चत्तारि रूवाणि दादूण अण्णोण्णब्भासे कीरदे, तो चोद्दसगुणजोयणलक्खेण खंडिदे सेढीए चदुभागो आगच्छदि । अध रूवं पडि सोलस दादूण अण्णोण्णब्भासो कीरदि, तो जोयणलक्खवग्गेण तिसहस्सछत्तीससदरूवगुणिदेण जगपदरम्हि भागे हिदे एगभागो

यहांपर सर्वत्र दो रूप कम गच्छराशि का विरलन करना चाहिए । ५, २१, ८५, ३४१, १३६५, ५४६१, ये घटाई जानेवाली ध्रुवराशियां अनन्तर अधस्तन राशिको चारसे गुणाकर और उनमें एक प्रक्षेप करनेपर उत्पन्न होती है और इसी क्रमसे स्वयम्भूरमणसमुद्र तक उत्पन्न होती हुई चली जाती हैं ।

४ × ४ = १६   १६ × ५ + ५ = ८५ चार स.

उदाहरण– (१) ४ – २ = २;   १   १

४ × ४ × ४ × = ६४;   ६४ × ५ + २१ = ३४१ पांच स.

(२) ५ – २ = ३;   १   १   १

४ × ४ × ४ × ४ = २५६;   २५६ × ५ + ८५ = १३६५ छह स.

(३) ६ – २ = ४;   १   १   १   १

४ × ४ × ४ × ४ × ४ = १०२४;   १०२४ × ५ + ३४१ = ५४६१

(४) ७ – २ = ५;   १   १   १   १   १   सात स. इत्यादि.

अब स्वयम्भूरमणसमुद्रको छोड़कर शेष सर्व समुद्रोंके क्षेत्रफल निकालनेका विधान कहते हैं– द्वीप और समुद्रोंकी जितनी संख्या है उसे आधाकर उसमेंसे एक घटावें । पुनः शेष राशिका विरलनकर प्रत्येक रूपके प्रति देयरूपसे दो को देकर परस्पर गुणा करनेपर चतुर्दशगुणित लक्ष योजनके वर्गमूलसे खंडित जगत्श्रेणीके वर्गमूलका आधा प्रमाण आता है । अब यदि पूर्व विरलनराशिमें प्रत्येक रूपके प्रति चार रूपोंको देयरूपसे देकर परस्पर गुणा किया जाता है, तो चतुर्दश-गुणित लक्ष योजनसे खंडित जगत्श्रेणीका चौथा भाग आता है और यदि उसी विरलनराशिमें प्रत्येक रूपके प्रति सोलहको देयरूपसे देकर परस्पर गुणा किया जाता है तो तीन हजार एक सौ छत्तीस (३१३६) रूपोंसे गुणित लक्ष योजनके वर्गसे भाजित जगत्प्रतरका एक भाग आता है ।

उदाहरण– (१) $\frac{\text{२अ}}{\text{२}} = \text{अ}; \quad \text{२}^{\text{अ} - \text{१}} = \frac{\frac{\sqrt{\text{र७}}}{\text{२}}}{\sqrt{\text{१४०००००यो.}}}$

(२) $\text{४}^{\text{अ} - \text{१}} = \frac{\frac{\text{र७}}{\text{४}}}{\text{१४००००० यो.}}$

(३) $\text{१६}^{\text{अ} - \text{१}} = \frac{\text{र७}^{\text{२}}}{\text{१०००००}^{\text{२}} \times \text{३१३६}}$

आगच्छदि । पुणो तं रूवूणं करिय एगेण आदिणा गुणिय पण्णारसरूवेहि भागे हिदे जोयणलक्खवग्गेण चालीसाहियसत्तेतालसहस्सरूवगुणिदेण जगपदरम्हि भागे हिदे एगभागो आगच्छदि । एदं दुगुणिय सेढिअसंखेज्जदिभागमेत्तमवणयणरासिं पुव्विल्ल-करणगाहाए अवणिदमवणिय लवणसमुद्दखेत्तफलेण गुणिदे सयंभूरमणविरहिदस-मुद्दाणं खेत्तफलं होदि । तं केत्तियमिदि भणिदे एगूण चालीसाहियवारससदरूवेहि जगपदरम्हि भागे हिदे एगभागपमाणं होदि । तत्थ मूलिल्लदोसमुद्दखेत्तफलं संखेज्जजोयणपदरमेत्तमवणिय रज्जुपदरम्हि अवणिदे एक्कवंचासरूवेहि सादिरेगेहि जगपदरम्हि खंडिदे एगखंडो आगच्छदि । तं संखेज्जसूचिअंगुलेहि गुणिदे तिरियलोगस्स

पुनः उसे, अर्थात् १६ के गुणितक्रमसे उपलब्ध राशिको, एक कम करके आदि स्थानवर्ती एकसे गुणितकर, पन्द्रह रूपोंसे भाग देनेपर चालीस अधिक सैंतालीस हजार अर्थात् सैंतालीस हजार चालीस (४७०४०) रूपोंसे गुणित लक्ष योजनके वर्गसे भाजित जगत्प्रतरका एक भाग आता है ।

उदाहरण— $$\frac{१\left(\frac{र७^2}{१००००० ^2 \times ३१३६}-१\right)}{१६-१} = \frac{र७^2}{१००००० ^2 \times ४७०४०}$$

इस प्रमाणको दुगुणाकर उसमेंसे पूर्वोक्त करणगाथासे निकाली हुई जगत्श्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण अपनयनराशिको घटाकर लवणसमुद्रके क्षेत्रफलसे गुणा करनेपर स्वयम्भूरमणसमुद्रसे रहित शेष समस्त समुद्रोंका क्षेत्रफल हो जाता है । वह क्षेत्रफल कितना होता है, ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं कि वह उनतालीस अधिक बारह सौ अर्थात् बारहसौ उनतालीस (१२३९) रूपोंसे भाजित जगत्प्रतरका एक भाग प्रमाण होता है ।

उदाहरण— $$\left\{२\left(\frac{र७^2}{१००००० ^2 \times ४७०४०}\right)-\frac{र७}{अ}\right\} \times ल = \frac{र७^2}{१२३९}$$ स्वयम्भूरमणको छोड़ शेष समुद्रोंका क्षेत्रफल.

(इसी प्रमाणको उत्पन्न करनेकी प्रक्रियाके विस्तारके लिये देखो गोम्मटसार जीवकांड सं. टीका व हिन्दी अनुवाद गाथा ५४७, पृ. ९६४ आदि.)

स्वयम्भूरमणसमुद्रसे रहित शेष समुद्रोंके उक्त क्षेत्रफलमेंसे मूल अर्थात् आदिके लवणोदधि और कालोदधि इन दो समुद्रोंके प्रतरात्मक संख्यात योजनप्रमाण क्षेत्रफलको घटाकर पुनः शेष राशिको प्रतरात्मक राजुके प्रमाणमेंसे घटा देनेपर साधिक इकावन रूपोंसे जगत्प्रतरके खंडित करनेपर एक खंड आ जाता है ।

उदाहरण— $$र^2-\left(\frac{र७^2}{१२३९}-२९\,ल\right) = \frac{र७^2}{५१\ (\text{कुछ अधिक})}$$ तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग तिर्यंच सासादन जीवोंका स्वस्थानक्षेत्र.

संखेज्जदिभागमेत्तं तिरिक्खसासणसत्थाणखेत्तं होदि। सेसपदसासणसम्मादिट्ठीहि सव्वे दीव-समुद्दा पुव्ववेरियदेवसंबंधेण फुसिज्जंति त्ति कट्टु जोयणलक्खबाहल्लं तप्पाओग्गबाहल्लं वा रज्जुपदरमुड्ढमेगूणवंचासखंडाणि करिय पदरागारेण ट्ठइदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि। 'वा' सद्दस्स अत्थो गदो।

मारणंतियसमुग्घादगदेहि सत्त चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। तिरिक्खसासणा मेरुमूलादो हेट्ठा किण्ण मारणंतियं करेंति त्ति वुत्ते णेरइएसु किण्ण उप्पज्जंति ? सभावादो। जदि एवं, तो हेट्ठा सभावादो चेव मारणंतियं ण मेलंति त्ति किण्ण घेप्पदे ? जदि सासणसम्मादिट्ठिणो हेट्ठा ण मारणंतियं मेलंति, तो तेसिं भवणवासियदेवेसु मेरुतलादो हेट्ठा ट्ठिदेसु उप्पत्ती ण पावदि त्ति वुत्ते ण एस दोसो, मेरुतलादो हेट्ठा सासणसम्मादिट्ठीणं मारणंतियं णत्थि त्ति एदं सामण्णवयणं।

उक्त एक खंडको तिर्यंचोंके अवगाहनासम्बन्धी संख्यात सूच्यंगुलोंसे गुणा करनेपर तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागप्रमाण तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका स्वस्थानक्षेत्र हो जाता है। चूंकि, विहारवत्स्वस्थानादि शेष पदस्थित तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टियोंके द्वारा समस्त द्वीप और समुद्र पूर्वभवके वैरी देवोंके सम्बन्धसे स्पर्श किये गये हैं, इसलिए लक्ष योजन बाहल्यवाले अथवा तत्प्रायोग्य बाहल्यवाले राजुप्रतरके ऊपरकी ओरसे उनंचास खंड करके प्रतराकारसे स्थापित करनेपर तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग हो जाता है। इस प्रकारसे यह सूत्रपठित 'वा' शब्दका अर्थ हुआ।

मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टियोंने कुछ कम सात बटे चौदह ($\frac{७}{१४}$) भाग स्पर्श किये हैं।

शंका— तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीव सुमेरुपर्वतके मूलभागसे नीचे मारणान्तिकसमुद्घात क्यों नहीं करते हैं ?

प्रतिशंका— यदि ऐसी शंका करते हैं, तो आप ही बताइए कि तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीव नारकियोंमें क्यों नहीं उत्पन्न होते हैं ?

समाधान— वे नारकियोंमें स्वभावसे ही उत्पन्न नहीं होते हैं।

प्रतिसमाधान— यदि ऐसा है तो सुमेरुपर्वतके मूलभागसे नीचे भी वे स्वभावसे मारणान्तिकसमुद्घात नहीं करते हैं, ऐसा क्यों नहीं स्वीकार कर लेते हैं ?

शंका— यदि सासादनसम्यग्दृष्टि जीव मेरुतलसे नीचे मारणान्तिकसमुद्घात नहीं करते हैं तो मेरुतलसे नीचे स्थित भवनवासी देवोंमें उनकी उत्पत्ति भी नहीं प्राप्त होती है ?

समाधान— उक्त शंकापर धवलाकार उत्तर देते हैं कि यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, 'मेरुतलसे नीचे सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका मारणान्तिकसमुद्घात नहीं होता है' यह सामान्य अर्थात् द्रव्यार्थिकनयका वचन है। किन्तु विशेष अर्थात् पर्यायार्थिकनयकी

विसेसदो पुण भण्णमाणे णेरइएसु हेट्ठिमएइंदिएसु वा ण मारणंतियं मेलंति त्ति एस परमत्थो । कधमेत्थ देसूणत्तं ? ण ताव हेट्ठिमजोयणसहस्सेण ऊणा सत्त चोद्दसभागा, तिरिक्खसासणेहि भवणवासिएसु मारणंतियं मेल्लमाणेहि तस्स वि छुवणसंभवोवलंभादो । मेरुमूलादो हेट्ठा देसूणजोयणलक्खं फुसंताणं सासादणाणं सत्त-चोद्दसभागेहि सादिरेगेहि होदव्वमिदि ? ण एस दोसो, छमग्गपयट्टेहि पडिणिययउप्पत्तिट्ठाणेहि तसजीवेहि णिरंतरं ण सत्त रज्जू फुसिज्जंति, तधा संभवासंभवा । सो वि कधं णव्वदे ? देसूणवयणण्णहाणुववत्तीदो । उववादस्स एक्कारह चोद्दसभागा फोसिदा त्ति वत्तव्वं । सुत्ते अउत्तं । कधमेदं णव्वदे ? कम्मइयकायजोगिसासणाण-

---

विवक्षासे कथन करने पर तो वे नारकियोंमें अथवा मेरुतलसे अधोभागवर्ती एकेन्द्रिय जीवोंमें मारणान्तिकसमुद्घात नहीं करते हैं, यही परमार्थ है ।

शंका– यहांपर अर्थात् मारणान्तिकसमुद्घातगत सासादनसम्यग्दृष्टियोंके क्षेत्रमें देशोनता अर्थात् कुछ कम सात बटे चौदह भागका कथन कैसे किया? क्योंकि, मेरुतलके अधोभागवर्ती एक हजार योजनसे कम सात बटे चौदह ($\frac{7}{14}$) भाग तो माने नहीं जा सकते । इसका कारण यह है कि भवनवासियोंमें मारणान्तिकसमुद्घातको करनेवाले तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टियोंके द्वारा उसके भी छुए जानेकी संभावना पाई जाती है । इसलिए मेरुतलसे नीचे कुछ कम एक लक्ष योजन प्रमाण क्षेत्रको स्पर्श करनेवाले तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टियोंका मारणान्तिक स्पर्शनक्षेत्र साधिक सात बटे चौदह ($\frac{7}{14}$) भाग होना चाहिए, न कि देशोन सात बटे चौदह भाग ?

समाधान– यह कोई दोष नहीं । इसका कारण यह है कि छहों भार्गोसे प्रवृत्त, अर्थात् पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊर्ध्व और अधोदिशा सम्बन्धी छहों भार्गोसे जानेवाले, एवं प्रतिनियत उत्पत्ति स्थानवाले त्रसजीवोंके द्वारा निरन्तर सात राजु स्पर्श नहीं किये जाते हैं, क्योंकि, उस प्रकारकी संभावनाका अभाव है ।

शंका– यह भी कैसे जाना ?

समाधान– 'देशोन' वचनकी अन्यथा अनुपपत्तिसे । अर्थात् यदि मारणान्तिकसमुद्घात करनेवाले त्रसजीवोंके द्वारा निरन्तर सात राजु प्रमाण क्षेत्र स्पर्श किया जाता, तो सूत्र में 'देशोन' यह वचन नहीं दिया जाता । इस अन्यथानुपपत्तिसे जाना जाता है कि मारणान्तिकसमुद्घात करनेवाले त्रसजीवोंके द्वारा सात राजुके स्पर्श किये जानेकी निरन्तर संभावना नहीं है ।

उपपादपदको प्राप्त तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टियोंने ग्यारह बटे चौदह ($\frac{11}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं, ऐसा कहना चाहिए ।

शंका– सूत्रमें नहीं कही गई यह बात कैसे जानी जाती है ?

मेक्कारह-चोद्दसभागफोसणपरूवयसुत्तादो[1], खुद्दाबंधम्मि उववादपरिणयसासणमेक्कारह-चोद्दसभागफोसणपरूवयसुत्तादो च णव्वदे । एत्थ महंते उववादफोसणखेत्ते संते मारणंतियफोसणमेव किमट्ठं परूविदं ? ण[2], एत्थ उववादविवक्खाए अभावादो । तदविवक्खा किण्णिबंधणा[3], सासणाणमेइंदिएसु अणुप्पज्जमाणाणं तत्थ मारणंतियविहाणणिबंधणा । तेण उववादस्स एक्कारह चोद्दसभागा फोसणमुवलब्भदे ।

सम्मामिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो[4] ॥ २६ ॥

एदस्स सुत्तस्स वट्टमाणकाले सव्वपदपरूवणाए खेत्तभंगो । सत्थाणसत्थाणविहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपदसम्मामिच्छादिट्ठीहि तीदाणागदकालेसु

समाधान— कार्मणकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके ग्यारह बटे चौदह ($\frac{11}{14}$) भागप्रमाण स्पर्शनक्षेत्रके प्ररूपक आगे कहे जानेवाले इसी स्पर्शनप्ररूपणाके सूत्रसे, तथा खुद्दाबंधमें कहे गये उपपादपरिणत सासादनसम्यग्दृष्टियोंके ग्यारह बटे चौदह ($\frac{11}{14}$) भागप्रमाण स्पर्शन करनेकी प्ररूपणा करनेवाले सूत्रसे जाना जाता है कि उपपादपदको प्राप्त तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टियोंने ग्यारह बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ।

शंका— उक्त प्रकारसे इतना अधिक उपपादपदका स्पर्शनक्षेत्र होते हुए भी यहां पर मारणान्तिक स्पर्शनक्षेत्र ही किसलिए प्ररूपण किया ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, यहां पर उपपादपदकी विवक्षाका अभाव है ।

शंका— उपपादपदकी अविवक्षा किंनिमित्तक है ?

समाधान— उपपादपदकी अविवक्षा एकेन्द्रियोंमें नहीं उत्पन्न होनेवाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके उनमें मारणान्तिकसमुद्घातके विधाननिमित्तक हैं। अर्थात् सासादनसम्यग्दृष्टि जीव एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न नहीं होते हैं, फिर भी वे उनमें मारणान्तिकसमुद्घात करते हैं । इसलिए यहां पर उपपादपदकी विवक्षा नहीं की गई और इसीलिए उपपादपदका ग्यारह बटे चौदह ($\frac{11}{14}$) भाग प्रमाण स्पर्शनक्षेत्र प्राप्त हो जाता है ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि तिर्यंचोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ २६ ॥

इस सूत्रकी वर्तमानकालमें स्वस्थानादि सर्व पदसम्बन्धी स्पर्शनप्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके समान है । स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकसमुद्घात, इन पांच पदोंवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि तिर्यंचोंने भूत और भविष्य इन दोनों कालोंमें सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे

---

१ कम्मइयकायजोगीसु × × सासणसम्मादिट्ठीहि × × एक्कारह चोद्दसभागा देसूणा ।जी. फो. ९६–९८.   २ म प्रतौ 'ण' इति पाठो नास्ति ।   ३ प्रतिषु 'किण्णबंधणा' इति पाठः ।

४ सम्यग्मिथ्यादृष्टिभिर्लोकस्यासंख्येयभागः । स. सि. १, ८.

तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो। एत्थ पज्जवट्ठियपरूवणा सासणपरूवणाए तुल्ला।

असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो[1] ॥ २७ ॥

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु त्ति महाधिकारो अणुवट्टदे। एदं सुत्तं वट्टमाण-कालविसिट्ठअसंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदखेत्तं जदो परूवेदि, तदो एदस्स परूवणाए खेत्तभंगो।

छ चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २८ ॥

असंजदसम्मादिट्ठीहि सत्थाणपदे वट्टमाणेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो अदीदकाले फोसिदो। एदे असंजदसम्मादिट्ठिणो सत्थाणपदे सव्वदीवेसु होंति, लवण-कालोदय-सयंभूरमण-समुद्देसु च। तम्हा सेससमुद्दखेत्तूणरज्जुपदरं एत्थ सत्थाणखेत्तं होदि। एदस्स-णयणविधाणं पुव्वं व कादव्वं। विहार-वेदण-कसाय-वेउव्वियपदेसु वट्टंता अदीदकाले

असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। यहांपर पर्यायार्थिकनयकी स्पर्शनप्ररूपणा सासादन गुणस्थानकी स्पर्शनप्ररूपणाके तुल्य जानना चाहिए।

असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत गुणस्थानवर्ती तिर्यंचोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ २७ ॥

'तिर्यंचगतिमें तिर्यंचोंमें' इस महाधिकारकी यहांपर अनुवृत्ति होती है। चूंकि यह सूत्र वर्तमानकालविशिष्ट असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत तिर्यंचोंके स्पर्शनक्षेत्रका प्ररूपण करता है, इसलिए इसकी प्ररूपणा क्षेत्रके समान ही है।

उक्त दोनों गुणस्थानवर्ती तिर्यंच जीवोंने अतीत और अनागतकालकी अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ २८ ॥

स्वस्थानपदपर वर्तमान असंयतसम्यग्दृष्टि तिर्यंचोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र अतीतकालमें स्पर्श किया है। ये असंयतसम्यग्दृष्टि तिर्यंच स्वस्थानस्वस्थानपदपर सर्व द्वीपोंमें होते हैं, तथा लवणसमुद्र, कालोदकसमुद्र और स्वयम्भूरमणसमुद्रमें भी होते हैं। इसलिए शेष समुद्रोंके क्षेत्रसे हीन राजुप्रतर यहांपर स्वस्थानक्षेत्र होता है। इसके निकालनेका विधान पूर्वके समान ही करना चाहिए। विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकसमुद्घात, इन पदोंपर वर्तमान जीवोंने अतीतकालमें सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग,

---

१ असंयतसम्यग्दृष्टिभिः संयतासंयतैर्लोकस्यासंख्येयभागः षट् चतुर्दशभागा वा देशोना। स. सि. १, ८.

तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागं, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागं, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणं फुसंति । कुदो ? पुव्ववेरियदेवपयोगदो जोयणलक्खबाहल्लं संखेज्ज-जोयणबाहल्लं वा रज्जुपदरं सव्वमदीदकाले फुसंति त्ति । मारणंतियपदे वट्टमाणेहि छ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । कुदो ? अच्चुवकप्पादो उवरि तेसिमुप्पत्तीए अभावादो तत्थ गमणाभावा । ण च उप्पत्तिखेत्तमुल्लंघिय गमणं संभवदि, अइप्पसंगा । उवरि णवगेवज्जेसु मिच्छादिट्ठिणो जदि उप्पज्जंति, तो असंजदसम्मादिट्ठीणं संजदासंजदाणं च उप्पत्ती किमिदि ण होज्ज ? मिच्छादिट्ठिणो दव्वलिंगेण उप्पज्जंति चे, एदे वि दव्वलिंगेण चेव उप्पज्जंतु, ण को वि दोसो । उप्पज्जंतु चे, ण, खेत्तस्स देसूणसत्त[1]-चोद्दसभागत्तप्पसंगादो ? ण एस दोसो, जदि वि णवगेवज्जेसु दव्वलिंगिणो असंजद-सम्मादिट्ठि संजदासंजदा च उप्पज्जंति[2], तो वि सत्त चोद्दसभागा ण होंति,

---

तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है, क्योंकि, पूर्वभवके वैरी देवोंके प्रयोगसे एक लाख योजन बाहल्यवाला अथवा संख्यात योजन बाहल्यवाला राजुप्रतररूप सर्वक्षेत्र अतीतकालमें स्पर्श किया है। मारणान्तिकसमुद्घातपदपर वर्तमान जीवोंने कुछ कम छह बटे चौदह भाग ($\frac{6}{14}$) स्पर्श किये हैं, क्योंकि, अच्युतकल्पसे ऊपर उनकी उत्पत्तिका अभाव होनेसे वहांपर गमनका अभाव है और उत्पत्तिक्षेत्रको उल्लंघन करके गमन संभव नहीं है, अन्यथा अतिप्रसंग दोष प्राप्त हो जायगा ।

शंका— अच्युतकल्पसे ऊपर यदि नवग्रैवेयकोंमें मिथ्यादृष्टि मनुष्य उत्पन्न होते हैं, तो असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत तिर्यंचोंकी उत्पत्ति क्यों नहीं होनी चाहिए ? यदि कहा जाय कि मिथ्यादृष्टि मनुष्य द्रव्यलिंगसे उत्पन्न होते हैं, तो ये भी द्रव्यलिंगसे ही उत्पन्न होवे, इसमें कोई दोष नहीं है । यदि कहा जाय कि वे नवग्रैवेयकोंमें उत्पन्न होवें, सो ऐसा भी नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि, फिर स्पर्शनक्षेत्रके देशोन सात बटे चौदह ($\frac{7}{14}$) भाग प्रमाण होनेका प्रसंग प्राप्त होगा ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, यद्यपि नवग्रैवेयकोंमें द्रव्यलिंगी मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत जीव उत्पन्न होते हैं, तो भी सात बटे चौदह ($\frac{7}{14}$) भागप्रमाण स्पर्शनक्षेत्र नहीं प्राप्त होता है, क्योंकि, उन नवग्रैवेयकोंमें मनुष्यक्षेत्रसे ही उत्पत्ति होती है । अर्थात् उनमें मनुष्य ही उत्पन्न होते हैं, तिर्यंच नहीं ।

उपपादगत असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानवर्ती तिर्यंच जीवोंने अतीतकालमें सामान्य-

---

१ प्रतिषु 'तस्स' इति पाठः ।

२ णरतिरिय देस-अयदा उक्कस्सेणच्चुदो त्ति णिग्गंथा । णर अयद-देस-मिच्छा गेवेज्जंतो त्ति गच्छंति ॥ त्रि. सा. ५४५.

माणुसखेत्तादो चेव तत्थुप्पत्तीदो। उववादगदेहि अदीदकाले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। तं जहा– तिरिक्खेसु तिरिक्ख-देव-णेरइयसम्मादिट्ठिणो ण उप्पज्जंति त्ति। कुदो? सहावादो। मणुसखइयसम्मादिट्ठिणो चेव उप्पज्जंति, पुव्वं मिच्छत्तसंसिदेहि बद्धतिरिक्खाउअत्तादो। ते वि भोगभूमीसु चेव उप्पज्जंति, दाणादिसयलदसधम्मे विज्जमाणाणुमोदादो। तेण सयंपहपव्वदोवरिमभागो सव्वो चेव उववादपरिणदसम्मादिट्ठीहि फुसिज्जदि त्ति तस्साणयणविधाणं वुच्चदे– सयंपहपव्वदादो परभागो दोहि वि पासेहि रज्जुपंचट्ठभागो रज्जूए तप्पाओग्गा संखेज्जा भागा वा होंति। तेसु रज्जुविक्खंभम्हि फेडिदेसु अवसेसा तिण्णि अट्ठभागा रज्जूए संखेज्जदिभागो वा होदि। एदेण विक्खंभायामेण ट्ठिदसम्मादिट्ठिउववादखेत्तं––

विक्खंभवग्गदसगुणकरणी वट्टस्स परिरओ होदि॥
विक्खंभचउब्भागो परिरयगुणिदो हवे गणिदं[1]॥ ८॥

एदीए गाहाए पदरागारेण कदे जगपदरं अट्ठसत्तावण्णभागब्भहियचालीसोत्तरचदुहि सदेहि खंडिद-एयभागो सादिरेगो आगच्छदि, तप्पाओग्गसंखेज्जरूवेहि छिण्णेग-

---

लोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। वह इस प्रकारसे है– तिर्यंचोंमें तिर्यंच, देव अथवा नारकी सम्यग्दृष्टि जीव नहीं उत्पन्न होते हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव ही है। केवल क्षायिकसम्यग्दृष्टि मनुष्य ही उत्पन्न होते हैं, क्योंकि, उन्होंने पूर्वमें मिथ्यात्वसे संसिक्त परिणामोंके द्वारा तिर्यंच आयुको बांध लिया है। सो वे भी जीव भोगभूमिके तिर्यंचोंमें ही उत्पन्न होते हैं, क्योंकि, सम्यग्दृष्टियोंकी दान आदि समस्त दश धर्मोंमें अनुमोदना विद्यमान रहती ही है। इसलिए स्वयंप्रभ पर्वतका उपरिम सर्व भाग उपपादपरिणत असंयतसम्यग्दृष्टि तिर्यंच जीवोंके द्वारा स्पर्श किया गया है, अतः उसके निकालनेके विधानको कहते हैं–

स्वयंप्रभ पर्वतसे परभागवर्ती क्षेत्र दोनों ही पार्श्वोंसे राजुके पांच बटे आठ ($\frac{5}{8}$) भाग अथवा राजुके तत्प्रायोग्य संख्यात बहुभाग प्रमाण होता है। उन भागोंको राजुके विष्कम्भमेंसे घटा देनेपर तीन बटे आठ ($\frac{3}{8}$) भाग अवशेष क्षेत्र अथवा राजुका संख्यातवां भागप्रमाण होता है। इस विष्कम्भ और आयामसे स्थित सम्यग्दृष्टिके उपपादक्षेत्रको–

विष्कम्भका वर्गकर उसे दशसे गुणा करके उसका वर्गमूल निकालें, वही वृत्त अर्थात् गोलाकृति क्षेत्रकी परिधिका प्रमाण हो जाता है। पुनः विष्कम्भके चतुर्भागसे परिधिको गुणा करनेपर क्षेत्रफल होता है॥ ८॥

इस गाथासूत्रके अनुसार प्रतराकारसे करनेपर आठ बटे सत्तावन भागसे अधिक चार सौ चालीस ($४४०\frac{८}{५७}$) भागोंसे खंडित सातिरेक एक भागप्रमाण जगत्प्रतर होता है।

---

१ त्रि. सा. ९३.

भागो वा । तं उस्सेघसंखेज्जंगुलेहि गुणिदे तिरिक्खसम्माविट्ठिउववादखेत्तं होदि । संजदासंजदेहि सत्थाणपदट्ठिएहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो । एत्थ सत्थाणखेत्तमाणिज्जमाणे तिरिक्खसम्मादिट्ठिउववादपदरखेत्तमुस्सेधगुणगारवज्जिदं रज्जुपदरम्हि अवणिदे जगपदरं सादिरेयपंचपंचासरूवेहि भजिदएगभागो आगच्छदि । तं संखेज्जुस्सेधंगुलेहि गुणिदं संजदासंजदसत्थाणखेत्तं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं होदि । विहारवदि-सत्थाण-वेदण-कसाय वेउव्वियपरिणदेहि संजदासंजदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो,

उदाहरण— विष्कम्भ $\frac{३}{८}$; $\sqrt{\frac{३}{८} \times \frac{३}{८} \times \frac{१०}{१}} \times \frac{३}{३२} \times \frac{१}{४९} = \sqrt{\frac{९०}{६४}} \times \frac{३}{३२} \times \frac{१}{४९}$

$= \frac{१९}{१६} \times \frac{३}{३२} \quad \frac{१}{४९} = \frac{५७}{२५०८८}$; $\frac{र७^{२}}{४४० \frac{८}{५७}}$ तिर्यंचसम्यग्दृष्टियोंके

उपपादका क्षेत्रफल.

विशेषार्थ— यहां उपलब्ध भागप्रमाणको सातिरेक कहनेका अभिप्राय यह है कि जो $\frac{९०}{६४}$ का वर्गमूल $\frac{१९}{१६}$ ले लिया गया है वह यथार्थ वर्गमूलसे कुछ अधिक हो गया है जिससे भागहार कुछ बढ़ गया है । पहले इसी विष्कम्भको लेकर परिधिके भिन्न प्रमाण द्वारा भिन्न क्षेत्रफल निकाला गया है । (देखो पृ. १६९)

अथवा तत्प्रायोग्य संख्यात रूपोंसे भाजित जगत्प्रतरका एक भाग आता है । उसे संख्यात उत्सेधांगुलोंसे गुणा करनेपर तिर्यंच सम्यग्दृष्टि जीवोंका उपपादक्षेत्र हो जाता है ।

स्वस्थानस्वस्थानपदस्थित संयतासंयत तिर्यंचोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है । यहां स्वस्थानस्वस्थानक्षेत्रको निकालनेपर उत्सेधगुणकारसे रहित तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टियोंके उपपाद प्रतरक्षेत्रको राजुप्रतरमेंसे घटा देनेपर साधिक पचपन रूपोंसे भाजित एक भाग जगत्प्रतर आता है ।

उदाहरण— तिर्यंच सम्यग्दृष्टियोंका उपपादप्रतरक्षेत्र =

$$\frac{र७^{२}}{४४० \frac{८}{५७}} = \frac{५७ \times ४९}{२५०८८}; \quad १ - \frac{५७ \times ४९}{२५०८८} = \frac{४५५}{५१२} = \frac{र७^{२}}{५५ \frac{९}{६५}}$$

उसे संख्यात उत्सेधांगुलोंसे गुणा करनेपर तिर्यंच संयतासंयतोंका स्वस्थानक्षेत्र हो जाता है, जो कि तिर्यग्लोकका संख्यातवां भागमात्र होता है ।

विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकसमुद्घात, इन पदोंसे परिणत तिर्यंच संयतासंयत जीवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका

तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो अदीदकाले फोसिदो ? कुदो ? संजदासंजदाणं वेरियदेवसंबंधेण जोयणलक्खबाहल्लं तिरियपदरस्स अदीदकाले फोसो अत्थि त्ति । मारणंतियसमुग्घादगदेहि संजदासंजदेहि छ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा, तिरिक्खसंजदासंजदाणमच्चुदकप्पो त्ति मारणंतिएण गमणसंभवादो।

पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्ख-जोणिणीसु मिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २९ ॥

एदं सुत्तं वट्टमाणकालसंबंधि त्ति एदस्स परूवणाए खेत्तभंगो ।

सव्वलोगो वा ॥ ३० ॥

परिसेसादो एदं सुत्तं तीदाणागदकालसंबंधी । एत्थ ताव 'वा' सद्दट्ठो उच्चदे- ति-विसेसणविसिट्ठसत्थाणतिरिक्खमिच्छादिट्ठीहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एदं खेत्तमाणिज्जमाणे असंखेज्जेसु समुद्देसु भोगभूमिपडिभागदीवाणमंतरेसु ट्ठिदेसु

संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र अतीतकालमें स्पर्श किया है, क्योंकि, संयतासंयत तिर्यंचोंका वैरी देवोंके हरणसम्बन्धसे एक लाख योजन बाहल्यवाले तिर्यक्प्रतरका अतीतकालमें स्पर्श किया गया है । मारणान्तिकसमुद्घातगत तिर्यंच संयतासंयतोंने कुछ कम छह बटे चौदह ($\frac{6}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं, क्योंकि, तिर्यंच संयतासंयतोंका अच्युतकल्प तक मारणान्तिकसमुद्घातसे गमन संभव है ।

पंचेन्द्रियतिर्यंच, पंचेन्द्रियतिर्यंच पर्याप्त और पंचेन्द्रियतिर्यंच योनिनियोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ २९ ॥

यह सूत्र वर्तमानकालसम्बन्धी है, इसलिए इसकी स्पर्शनप्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके समान जानना चाहिए ।

उक्त तीनों प्रकारके तिर्यंच जीवोंने अतीत और अनागत कालमें सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ ३० ॥

पारिशेषन्यायसे यह सूत्र भूत और भविष्यकालसम्बन्धी है । यहांपर पहले 'वा' शब्दका अर्थ कहते है- पंचेन्द्रियतिर्यंच, पंचेन्द्रियतिर्यंचपर्याप्त और योनिमती इन तीन विशेषणोंसे विशिष्ट स्वस्थानपदस्थित तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है । इस क्षेत्रको निकालनेपर असंख्यात समुद्रोंमें और भोगभूमिके प्रतिभागरूप द्वीपोंके अन्तरालोंमें स्थित क्षेत्रोंमें स्वस्थानपदस्थित उक्त तीन प्रकारके तिर्यंच नहीं हैं, इसलिए इस

सत्थाणपदट्ठिदतिविहातिरिक्खा णत्थि त्ति एवं खेत्तं पुव्वविधाणेणाणिय रज्जुपदरम्हि अवणिय संखेज्जसूचिअंगुलेहि गुणिदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं पंचिंदिय-तिरिक्खतिगमिच्छादिट्ठिसत्थाणखेत्तं होदि। विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-पदपरिणदतिविहमिच्छादिट्ठीहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। कुदो? मित्तामित्तदेववसेण सव्वदीव-सागरेसु संचरणं पडि विरोहाभावादो। तेणेत्थ संखेज्जंगुलबाहल्लं तिरिय-पदरमुड्ढमेगूणवंचासखंडाणि करिय पदरागारेण ठइदे पंचिंदियतिरिक्खतिगमिच्छा-दिट्ठिविहारवदिसत्थाणादिखेत्तं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं होदि। 'वा' सद्दट्ठो गदो। मारणंतिय-उववादगदपंचिंदियतिरिक्खतिगमिच्छादिट्ठीहि सव्वलोगो फोसिदो। लोगणालीए बाहिं तसकाइयाणमसंभवादो सव्वलोगो त्ति वयणं कधं घडदे? ण एस दोसो, मारणंतिय-उववादट्ठिदतसजीवे मोत्तूण सेसतसाणं बाहिरे अत्थित्तप्पडिसेहादो[1]।

क्षेत्रको पूर्वविधानसे लाकर और राजुप्रतरमेंसे घटाकर संख्यात सूच्यंगुलोंसे गुणा करनेपर तिर्यग्लोकका संख्यातवें भागप्रमाण पंचेन्द्रियतिर्यंच, पंचेन्द्रियतिर्यंचपर्याप्त और पञ्चेन्द्रिय-तिर्यञ्चयोनिनी इन तीन प्रकारके मिथ्यादृष्टि तिर्यंचोंका स्वस्थानक्षेत्र हो जाता है। विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकसमुद्घात, इन पदोंसे परिणत उक्त तीन प्रकारके मिथ्यादृष्टि तिर्यंचोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है, क्योंकि, पूर्वभवके मित्र या शत्रुरूप देवोंके वशसे सर्व द्वीप और समुद्रोंमें संचार (विहार) करनेके प्रति कोई विरोध नहीं है। इसलिए यहांपर संख्यात अंगुल बाहल्यवाले तिर्यक्प्रतरको ऊपरसे उनंचास खंड करके प्रतराकारसे स्थापित करनेपर पंचेन्द्रिय तिर्यंच आदि तीन प्रकारके मिथ्यादृष्टि तिर्यंच जीवोंसम्बन्धी विहारवत्स्वस्थान आदिका क्षेत्र हो जाता है, जो कि तिर्यग्लोकका संख्यातवां भागमात्र होता है। इस प्रकारसे 'वा' शब्दका अर्थ हुआ।

मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपदगत पंचेन्द्रिय तिर्यंच आदि तीन प्रकारके मिथ्यादृष्टि तिर्यंच जीवोंने सर्वलोक स्पर्श किया है।

शंका— लोकनालीके बाहिर त्रसकायिक जीवोंके असंभव होनेसे 'सर्वलोक स्पर्श किया है' यह वचन कैसे घटित होता है?

समाधान— यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपदस्थित त्रसजीवोंको छोड़कर शेष त्रसजीवोंका त्रसनालीके बाहिर अस्तित्वका प्रतिषेध किया गया है।

---

१ उववाद-मारणंतियपरिणदतसमुज्झिऊण सेसतसा। तसणालिबाहिरम्हि य णत्थि त्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं ॥ गो. जी. १९९.

सेसाणं तिरिक्खगदीणं भंगो ॥ ३१ ॥

सेसाणमिदि उत्ते सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदा घेत्तव्वा, अण्णेसिमसंभवादो । एक्किस्से तिरिक्खगदीए तिरिक्खगदीणमिदि बहुत्तणिद्देसो कधं घडदे ? ण एस दोसो, एक्किस्से वि तिरिक्खगदीए गुणट्ठाणादिभेएण बहुत्तविरोहाभावादो । एदेसिं चदुण्हं गुणट्ठाणाणं परूवणा वट्टमाणकाले खेत्तसमाणा । अदीदकाले एदेसिं तिरिक्खोघपरूवणाए तुल्ला । णवरि जोणिणीसु असंजदसम्मादिट्ठीणं उववादो णत्थि, एत्तिओ चेव विसेसो ।

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ३२ ॥

वट्टमाणकाले सत्थाण-वेदण-कसायपदे वट्टमाणपंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तएहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । मारणंतिय-उववादपदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो ।

शेष तिर्यंचगतिके जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ।। ३१ ।।

'शेष' ऐसा पद कहने पर सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत तिर्यंचोंको ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि, इनके अतिरिक्त अन्य तिर्यंचोंका ग्रहण करना असंभव है ।

शंका— एक ही तिर्यंचगतिके होने पर 'तिरिक्खगदीणं' यह बहुवचनका निर्देश कैसे घटित होता है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, एक तिर्यंचगतिसामान्यके होने पर भी गुणस्थान आदिके भेदसे बहुत्वके होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

इन उक्त चारों गुणस्थानोंकी स्पर्शनप्ररूपणा वर्तमानकालमें क्षेत्रके समान है और इन्हीं चार गुणस्थानवर्ती तिर्यंचोंकी अतीतकालिक स्पर्शनप्ररूपणा तिर्यंचोंकी ओघ-स्पर्शनप्ररूपणाके तुल्य है । किन्तु योनिमतियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका उपपाद नहीं होता है, इतनी मात्र ही विशेषता है ।

पंचेन्द्रियतिर्यंच लब्ध्यपर्याप्त जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ।। ३२ ।।

वर्तमानकालमें स्वस्थानस्वस्थान, वेदना और कषायसमुद्घात, इन पदोंपर वर्तमान पंचेन्द्रियतिर्यंच अपर्याप्तकोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है । मारणान्तिकसमुद्घात और उपपाद पदवाले पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्त तिर्यंचोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग मनुष्यलोक तथा तिर्यग्लोक, इन दोनों लोकोंसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है ।

सव्वलोगो वा ॥ ३३ ॥

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तेत्ति अणुवट्टदे । एत्थ ताव 'वा' सद्दट्ठो उच्चदे– सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसायपदगदेहि पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तएहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । कुदो ? अड्ढाइज्जदीव-समुद्देसु कम्मभूमिपडिभागे सयंपहपव्वदपरभागे च तेसिं संभवादो । अदीदकाले सयंपहपव्वदपरभागं सव्वं ते फुसंति त्ति तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं खेत्तं होदि । तस्साणयणविधाणं वुच्चदे– सयंपहपव्वदब्भंतरखेत्तं जगपदरस्स संखेज्जदिभागं रज्जुपदरम्हि अवणिदे सेसं जगपदरस्स संखेज्जदिभागो होदि । तं संखेज्जसूचिअंगुलेहि गुणिदे[1] तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि । अपज्जत्ताणमंगुलासंखेज्जदिभागोगाहणाणं कधं संखेज्जंगुलुस्सेधो लब्भदे ? ण, मुअपंचिंदियादितसकलेवरेसु अंगुलस्स संखेज्जदिभागमादिं कादूण जाव संखेज्जजोयणाणि त्ति कमवड्ढीए ट्ठिदेसु उप्पज्जमाणाणमपज्जत्ताणं संखेज्जंगुलुस्सेधं पडि

पंचेन्द्रियतिर्यंच लब्ध्यपर्याप्त जीवोंने अतीत और अनागतकालकी अपेक्षा सर्वलोक स्पर्श किया है ।। ३३ ।।

इस सूत्रमें 'पंचेन्द्रियतिर्यंचअपर्याप्त' इस पदकी अनुवृत्ति होती है । अब यहांपर 'वा' शब्दका अर्थ कहते हैं– स्वस्थानस्वस्थान, वेदना और कषायसमुद्घात, इन पदोंको प्राप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है, क्योंकि, अढ़ाईद्वीप और दो समुद्रोंमें, तथा कर्मभूमिके प्रतिभागवाले स्वयंप्रभपर्वतके परभागमें पंचेन्द्रियतिर्यंच लब्ध्यपर्याप्त जीवोंका होना सम्भव है । अतीतकालमें स्वयंप्रभपर्वतके सम्पूर्ण परभागको वे जीव स्पर्श करते हैं, इसलिए वह क्षेत्र तिर्यग्लोकका संख्यातवां भागमात्र होता है । अब उस क्षेत्रके निकालनेके विधानको कहते हैं– स्वयंप्रभपर्वतका आभ्यन्तर क्षेत्र जगत्प्रतरके संख्यातवें भागप्रमाण है । उसे राजुप्रतरमेंसे घटा देनेपर शेष क्षेत्र जगत्प्रतरका संख्यातवां भाग होता है । उसे संख्यात सूच्यंगुलोंसे गुणा करनेपर तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग हो जाता है ।

शंका– अंगुलके असंख्यातवें भागमात्र अवगाहनवाले लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके संख्यात अंगुलप्रमाण उत्सेध कैसे पाया जा सकता है ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, मृत पंचेन्द्रियादि त्रसजीवोंके अंगुलके संख्यातवें भागको आदि करके संख्यात योजनों तक क्रमवृद्धिसे स्थित शरीरोंमें उत्पन्न होनेवाले लब्ध्यपर्याप्त जीवोंके संख्यात अंगुल उत्सेधके प्रति कोई विरोध नहीं है ।

अथवा, सभी द्वीप और समुद्रोंमें पंचेन्द्रिय तिर्यंच लब्ध्यपर्याप्त जीव होते हैं, क्योंकि,

१ प्रतिषु 'गुणिदेहि' इति पाठः ।

विरोहाभावादो । अथवा सव्वेसु दीव-समुद्देसु पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्ता अत्थि । कुदो, पुव्ववेरियदेवसंबंधेण एगबंधणबद्धछज्जीवणिका ओगाढकम्मभूमिपडिभागुप्पण्ण-ओरालियदेहमहामच्छादीणं सव्वदीव-समुद्देसु संभवोवलंभादो । महामच्छोगाहणम्हि एगबंधणबद्धछज्जीवणिकायाणमत्थित्तं कधं णव्वदे ? वग्गणम्हि उत्तअप्पाबहुगादो । तं जहा– 'सव्वत्थोवा महामच्छसरीरे पदरस्स असंखेज्जभागमेत्ता तसकाइयजीवा । तेउकाइया जीवा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । पुढविकाइया जीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तो विसेसो ? असंखेज्जलोगमेत्तो । तेसिं पडिभागो वि असंखेज्जलोगमेत्तो । एवं आउकाइया विसेसाहिया । वाउकाइया विसेसाहिया । वणप्फइकाइया अणंतगुणा त्ति' । ण च सव्वे ते पज्जत्ता चेव, तसअपज्जत्ताणं पि[1] तेउकाइयाणं च संभवादो । ण च मुदसरीरे चेव पंचिदियअपज्जत्ताणं संभवो त्ति वोत्तुं जुत्तं, तस्स विधाययसुत्ताभावा । महामच्छादिदेहे तेसिमत्थित्तस्स सूचगं पुण

पूर्वभवके वैरी देवोंके सम्बन्धसे एक बंधनमें बद्ध षट्कायिक जीवोंके समूहसे व्याप्त और कर्मभूमिके प्रतिभागमें उत्पन्न हुए औदारिकदेहवाले महामच्छादिकोंकी सर्वद्वीप और समुद्रोंमें संभावना पाई जाती है ।

शंका– महामच्छकी अवगाहनामें एक बन्धनसे बद्ध षट्कायिक जीवोंका अस्तित्व कैसे जाना जाता है ?

समाधान– वर्गणाखंडमें कहे गये अल्पबहुत्वानुयोगद्वारसे जाना जाता है । वह इस प्रकार है– 'महामत्स्यके शरीरमें सबसे कम जगत्प्रतरके असंख्यातवें भागमात्र त्रसकायिक जीव होते हैं । उन त्रसकायिक जीवोंसे तेजस्कायिक जीव असंख्यातगुणे होते हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । तेजस्कायिक जीवोंसे पृथिवीकायिक जीव विशेष अधिक होते हैं । कितने प्रमाण विशेषसे अधिक होते हैं ? असंख्यात लोकमात्र विशेषसे अधिक होते हैं । उनका प्रतिभाग भी असंख्यात लोकमात्र होता है । इसी प्रकारसे पृथिवीकायिक जीवोंसे अप्कायिक जीव विशेष अधिक होते हैं । अप्कायिक जीवोंसे वायुकायिक जीव विशेष अधिक होते हैं और वायुकायिक जीवोंसे वनस्पतिकायिक जीव अनन्तगुणे होते हैं' ।

महामच्छके शरीरमें पूर्वमें कहे गये ये सब जीव केवल पर्याप्त ही नहीं होते हैं, किन्तु उसके शरीरमें त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्त जीव और तेजस्कायिक जीवोंका भी होना संभव है । तथा मृत शरीरमें ही पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्त जीव संभव है ऐसा भी कहना युक्त नहीं है, क्योंकि, इस बातके विधायक सूत्रका अभाव है । किन्तु महामच्छादिके देहमें उनके अस्तित्वका सूचक यही उक्त अल्पबहुत्वसूत्र है । त्रसपर्याप्तराशिसे त्रसअपर्याप्तराशि असंख्यातगुणी होती है, इसलिए जहां पर त्रसजीवोंकी

---

१ 'प्रतिषु वी हि' इति पाठः ।

इदमप्पाबहुगसुत्तं होदि। तसपज्जत्तरासीदो तसअपज्जत्तरासी असंखेज्जगुणो। तेण जत्थ तसजीवाणं संभवो होदि, तत्थ सव्वत्थ वि पज्जत्तेहितो अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा होंति। तम्हा संखेज्जंगुलबाहल्लं तिरियपदरमेगूणवंचासखंडाणि करिय पदरागारेण ठइदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तसत्थाण-वेदण-कसायखेत्तं होदि। 'वा' सद्दट्ठो गदो। मारणंतिय-उववादगदेहि सव्वलोगो फोसिदो, सव्वत्थ गमणागमणं पडि विरोहाभावा।

मणुसगदीए मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणी मिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं लोगस्स असंखेज्जदिभागो[1] ॥ ३४ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो खेत्ताणिओगद्दारे परूविदो त्ति णेह परूविज्जदे।

सव्वलोगो वा ॥ ३५ ॥

एत्थ ताव 'वा' सद्दट्ठो उच्चदे– सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो फोसिदो, तीदाणागद-कालेसु वेरियदेवसंबंधेण वि माणुसोत्तरसेलादो परदो गमणाभावा। माणुसखेत्तस्स

संभावना होती है वहां पर सर्वत्र पर्याप्त जीवोंसे अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे होते हैं। अतएव संख्यात अंगुल बाहल्यवाले तिर्यक्प्रतरके उनंचास खंड करके प्रतराकारसे स्थापित करने पर तिर्यग्लोकके संख्यातवां भागमात्र पंचेन्द्रिय तिर्यंच लब्ध्यपर्याप्त जीवोंका स्वस्थान वेदना और कषायसमुद्घातगत क्षेत्र होता है। इस प्रकारसे 'वा' शब्दका अर्थ समाप्त हुआ।

मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादगत पंचेन्द्रियतिर्यंच लब्ध्यपर्याप्त जीवोंने सर्वलोक स्पर्श किया है, क्योंकि, उनके सर्व लोकमें गमनागमनके प्रति विरोधका अभाव है।

मनुष्यगतिमें मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनियोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है॥ ३४॥

इस सूत्रका अर्थ क्षेत्रानुयोगद्वारमें प्ररूपण किया जा चुका है, इसलिए यहांपर पुनः प्ररूपण नहीं किया जाता है।

मिथ्यादृष्टि मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनियोंने अतीत और अनागत-कालकी अपेक्षा सर्वलोक स्पर्श किया है॥ ३५॥

अब यहांपर पहिले 'वा' शब्दका अर्थ कहते हैं– स्वस्थानस्वस्थान, विहार-वत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकसमुद्घातसे परिणत उपर्युक्त जीवोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है, क्योंकि, अतीत और अनागतकालमें वैरी देवोंके सम्बन्धसे भी मानुषोत्तर शैलसे परे मनुष्योंके गमनका अभाव है। किन्तु मनुष्यक्षेत्रका

---

१ मनुष्यगतौ मनुष्यैर्मिथ्यादृष्टिभिरकस्यासंख्येयभागः सर्वलोको वा स्पृष्टः। स. सि. १, ८.

पुण संखेज्जदिभागो फोसिदो मिच्छादिट्ठीणं आगासगमणादिविसेससत्तिविरहिदाणं जोयणलक्खबाहल्लेण फोसाभावादो। अथवा सव्वपदेहि माणुसलोगो देसूणो फोसिदो, पुव्ववेरियदेवसंबंधेण उड्ढं देसूणजोयणलक्खुप्पायणसंभवादो। एसो 'वा' सद्दट्ठो। मारणंतिय-उववादगदेहि सव्वलोगो फोसिदो, सव्वलोगे गमणागमणे विरोहाभावादो।

सासणसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो[1] ॥ ३६ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो पुव्वं परूविदो।

सत्त चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ३७ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्धादगदेहि सासणसम्मादिट्ठीहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो फोसिदो। माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो। अथवा विहारादि-उवरिमपदेहि माणुसखेत्तं देसूणं फोसिदं।

संख्यातवां भाग स्पर्श किया है, क्योंकि, आकाशगमनादि रूप विशेष शक्तिसे विरहित मिथ्यादृष्टि जीवोंके एक लाख योजनके बाहल्यसे सर्वत्र स्पर्शका अभाव है। अथवा, सर्व पदोंकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि मनुष्योंने देशोन मनुष्यलोकका स्पर्श किया है, क्योंकि, पूर्वभवके वैरी देवोंके सम्बन्धसे ऊपर कुछ कम लाख योजन तक उनका जाना आना संभव है। इस प्रकार यह 'वा' शब्दका अर्थ समाप्त हुआ।

मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपदगत उक्त तीनों प्रकारके मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीवोंने सर्वलोक स्पर्श किया है, क्योंकि, इन दोनों पदोंकी अपेक्षा सर्वलोकके भीतर जाने आनेमें कोई विरोध नहीं है।

मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ३६ ॥

इस सूत्रका अर्थ पहले कहा जा चुका है।

मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंने अतीत और अनागतकालकी अपेक्षा कुछ कम सात बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ ३७ ॥

स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकसमुद्घातगत सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्योंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है, तथा मानुषक्षेत्रका संख्यातवां भाग स्पर्श किया है। अथवा, विहारवत्स्वस्थानादि ऊपरके पदोंकी अपेक्षा देशोन मनुष्यक्षेत्रको स्पर्श किया है।

शंका— यहां देशोन पदसे कितना कम क्षेत्र विवक्षित है?

---

१ सासादनसम्यग्दृष्टिभिर्लोकस्यासंख्येयभागः सप्त चतुर्दशभागा वा देशोनाः। स. सि. १, ८.

केण ऊणं ? चित्तकुलसेल-मेरुपव्वद-जोइसावासादिणा । माणुसेहि अगम्मपदेसस्स तस्स कधं माणुसखेत्तववएसो ? ण, लद्धिसंपण्णमुणीणमगम्मपदेसाभावा । मारणंतिय-समुग्घादगदेहि सत्त चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । किं कारणं ? सासणाणं मारणंतिएण भवणवासियलोगादो हेट्ठा गमणाभावादो, उवरि सव्वत्थ मारणंतिएण गमणसंभावादो । उववादगदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो फोसिदो; तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो । ण ताव णेरइय सासणाणं मणुसेसुप्पज्जमाणाणं फोसणं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि । दुक्खंभदुबाहुखेत्तफलस्स णेरइय-असंजदसम्मादिट्ठिमारणंतियखेत्तफलस्सेव तिरियलोगासंखेज्जदिभागत्तुवलंभादो । णादीदकाले अट्ठरज्जुमाऊरिय ट्ठिददेवसासणाणं मणुस्सेसुप्पज्जमाणाणमुववादफोसणं

समाधान– चित्रापृथिवी, कुलाचल, मेरुपर्वत और ज्योतिष्क आवास आदिसे हीन अपेक्षा विवक्षित है ।

शंका– मनुष्योंसे अगम्य प्रदेशवाले इस कुलाचल आदिके क्षेत्रको 'मनुष्यक्षेत्र' यह संज्ञा कैसे प्राप्त है ।

समाधान– नहीं, क्योंकि, लब्धिसम्पन्न मुनियोंके लिए (मनुष्यलोकके भीतर) अगम्य प्रदेशका अभाव है ।

मारणान्तिकसमुद्घातगत सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्योंने कुछ कम सात बटे चौदह ($\frac{7}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं । इसका कारण यह है कि सासादनसम्यग्दृष्टियोंका मारणान्तिक-समुद्घातके द्वारा भवनवासियोंके निवासलोकसे नीचे गमन नहीं होता है । किन्तु ऊपर सर्वत्र मारणान्तिकसमुद्घातके द्वारा गमन संभव है । उपपादगत उक्त तीनों प्रकारके सासादन-सम्यग्दृष्टि मनुष्योंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है और तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग स्पर्श किया है ।

शंका– मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले नारकी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका स्पर्शनक्षेत्र भी तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग नहीं होता, क्योंकि, (असंख्यात योजन विस्तृत श्रेणीबद्धादि बिलोंके) अपने दोनों ओरके दंडाकार व भुजाकार क्षेत्रोंका क्षेत्रफल[1], नारकी असंयतसम्यग्दृष्टि-योंके मारणान्तिकक्षेत्रफलके समान, तिर्यग्लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण पाया जाता है । और न अतीतकालमें ही आठ राजुप्रमाण क्षेत्रको व्याप्त करके स्थित और मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंका उपपादसम्बन्धी स्पर्शनक्षेत्र तिर्यग्लोकका संख्यातवां

---

१ 'दुक्खंभदुबाहुखेत्तफलस्स' इस पदका अर्थ बहुत स्पष्ट नहीं हुआ । प्राय: यही पद पहले भी आ चुका है । (देखो पृ. १८७.) इस पदकी यथाशक्य सार्थकता निकालकर अर्थ कर दिया गया है । संभव है ये उक्त नरकके बडे से बडे बिलोंके नाम हों । त्रिलोकप्रज्ञप्तिमें बिलोंके नाम इस प्रकारके मिलते हैं, किन्तु ये नाम हमें अभी तक नहीं मिले ।

तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि, छक्कावक्कमणियमबलेण पणदालीसजोयण-लक्खविक्खंभ-अट्ठरज्जुस्सेहचदुपाणद्धीसु मणुअलोगमागच्छंताणमुववादखेत्तफलस्स तिरियलोगादो संखेज्जगुणत्तुवलंभादो। ण तिरिक्खेहिंतो मणुस्सेसुप्पज्जमाणसासणाण-मुववादखेत्तं वि तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि, तत्थ वि चदुहि चेव पंथेहि आगमणदंसणादो त्ति ? एत्थ परिहारो उच्चदे– ण ताव णेरइयसासणे अस्सिदूण उत्तदोसो, तण्णिबंधणुववादफोसणबलेण तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्ताणब्भुव-गमादो। ण देवसासणे अस्सिदूण उत्तदोसो वि, अट्ठरज्जुस्सेहलोगणालीए समचउ-रस्साए अंतोट्ठिददेवसासणाणं हेट्ठिम-उवरिमाणं च कंडुज्जुवाए गईए चढणोयरण-वावारेण मणुवलोमपणिधिमागंतूण एग-दोविग्गहं करिय मणुस्सेसुप्पज्जमाणाणं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तफोसणस्सुवलंभादो। तिरिच्छं गंतूण विग्गहं करिय देवसासणा मणुसेसु किण्ण उप्पज्जंति ? मणुसगइविरहियदिसाए सहावदो चेव तेसिं गमणाभावादो। ण च मणुसगइसंमुहमागंतूण विग्गहं करिय मणुस्सेसुप्पण्णाणं खेत्तं

भाग होता है, क्योंकि, भवान्तरमें संक्रमणके समय पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊपर और नीचे, इसप्रकार छह दिशाओंमें गमनागमनरूप षट् अपक्रम-नियमके बलसे पैंतालीस लाख योजन विष्कम्भवाले व आठ राजु उत्सेधवाले क्षेत्रके चारों मार्गोंसे मनुष्यलोकको आनेवाले जीवोंका उपपादसम्बन्धी क्षेत्रफल, तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणा पाया जाता है। और न तिर्यंचोंसे मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंका उपपादक्षेत्र भी तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग होता है, क्योंकि, वहांपर भी चारों ही दिशाओंके मार्गोंसे आगमन देखा जाता है ?

समाधान– अब पूर्वोक्त आशंकाका परिहार करते हैं– न तो नारकी सासादन-सम्यग्दृष्टियोंको आश्रय करके उक्त दोष प्राप्त होता है, क्योंकि, तन्निमित्तक उपपादसम्बन्धी स्पर्शनके बलसे तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग नहीं स्वीकार किया गया है। और न देव सासादनसम्यग्दृष्टियोंका आश्रय करके भी उक्त दोष प्राप्त होता है, क्योंकि, आठ राजु उत्सेधवाली समचतुरस्र लोकनालीके अन्तःस्थित देव सासादनसम्यग्दृष्टियोंका और अधस्तन तथा उपरिम जीवोंका भी बाणकी तरह सीधी गतिसे चढ़ने और उतरनेरूप व्यापारसे मनुष्यलोककी प्रणिधि (तट) को आकर और एक या दो विग्रह करके मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंका तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागमात्र स्पर्शन पाया जाता है।

शंका– तिरछे जाकर पुनः विग्रह करके सासादनसम्यग्दृष्टि देव, मनुष्योंमें क्यों नहीं उत्पन्न होते हैं ?

समाधान– मनुष्यगतिसे रहित दिशामें स्वभावसे ही उनका गमन नहीं होता है।

तथा, मनुष्यगतिके सम्मुख आकर और विग्रह करके मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंका भी क्षेत्र बहुत नहीं पाया जाता है, क्योंकि, वह क्षेत्रके तिर्यग्लोकके संख्यातवें

बहुअमुवलब्भइ, तक्खेत्तस्स तिरियलोयस्स संखेज्जदिभागपमाणत्तादो । तम्हा एवंविहणियमवसेण तलफोसणमेत्तस्सेव संगहो कायव्वो । मणुसोववादिणो देवसासणा मूलसरीरं पविसिय कालं करेंति त्ति भणंताणमभिप्पायेण च तिरियलोयस्स संखेज्जदिभागमेत्तमेदं फोसणं समत्थेदव्वं । तिरिक्खसासणेसु मणुस्सेसुप्पज्जमाणेसु वि तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो फोसणमुवलब्भइ, तिरिक्खसासणसम्माइट्ठीणं चउगईसुप्पज्जमाणाणं तिरिक्खभवाभिमुहसेसगइजीवाणं च तिरिच्छं गंतूण विग्गहं करिय उप्पत्तिदंसणादो । अतएव च 'तिरोऽञ्चन्तीति तिर्यञ्चः' । एदेसिमेवंविहा गई अत्थि त्ति कुदो णव्वदे ? देवसासणोववादस्स पंच-चोद्दसभागफोसणपरूवणण्णहाणुववत्तीदो । तदो ण पुव्वुत्तदोसप्पसंगो त्ति सद्दहेयव्वं ।

सम्मामिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो[1] ॥ ३८ ॥

सम्मामिच्छाइट्ठीणं वट्टमाणकाले सगसव्वपदेहि खेत्तभंगो । सत्थाणपदट्ठिएहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो । विहारवदि-

---

भागप्रमाण है । इसलिए इस प्रकारके नियमके वशसे मेरुके तलभागके स्पर्शनमात्रका ही संग्रह करना चाहिए । मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले देव सासादनसम्यग्दृष्टि जीव मूलशरीरमें प्रवेश करके मरण करते हैं, ऐसा कहने वाले आचार्योंके अभिप्रायसे तिर्यग्लोकका संख्यातवां भागमात्र स्पर्शन होता है, ऐसा समर्थन करना चाहिए । तथा तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें और मनुष्योंमें भी उत्पन्न होने वाले जीवोंमें तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागप्रमाण स्पर्शनक्षेत्र पाया जाता है, क्योंकि, चारों गतियोंमें उत्पन्न होने वाले तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टियोंके और तिर्यंचभवके अभिमुख शेष गतिके जीवोंके तिरछे जाकर और विग्रह करके उत्पत्ति देखी जाती है । और इसीलिए वे 'तिरछे जाते हैं अतएव तिर्यंच हैं' ऐसी व्युत्पत्ति की गई है ।

शंका– इन तिर्यंचोंकी इस प्रकारकी तिरछी गति होती है, यह कैसे जाना जाता है ।

समाधान– अन्यथा देव सासनसम्यग्दृष्टियोंके उपपादसम्बन्धी पांच बटे चौदह (५/१४) भागप्रमाण स्पर्शनक्षेत्रकी प्ररूपणा नहीं हो सकती थी । इसलिए पूर्वोक्त दोष नहीं प्राप्त होता है, ऐसा श्रद्धान करना चाहिए ।

मनुष्योंमें सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ।। ३८ ।।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्योंका वर्तमानकालमें स्पर्शनक्षेत्र अपने सर्व पदोंकी अपेक्षा क्षेत्रप्ररूपणाके समान है । स्वस्थानस्वस्थान पदस्थित उक्त गुणस्थानवर्ती मनुष्योंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मानुष्यक्षेत्रका संख्यातवां भाग स्पर्श

---

१ सम्यग्मिथ्यादृष्टयादीनामयोगकेवल्यन्तानां क्षेत्रवत्स्पर्शनम् । स. सि. १, ८.